P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शिक्षा एवं आधुनिकरण का महिला छात्राओं के मूल्यों पर प्रभावः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

जिया जाफरी
सीनियर रिसर्च फेलो,
समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उ.प्र., भारत

सारांश

भारत जैसे देश में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला शिक्षा एक पूर्ण आवश्यकता के रूप में देखी जाती है शिक्षा से ना केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है अपितु विभिन्न प्रकार की कुशलताओं, आधुनिक मूल्यों, क्षमताओं, योग्यताओं की प्राप्ति होती है और शिक्षित व्यक्ति सामाजिक आर्थिक विकास में एक कुशल मानव शक्ति के रूप में तुलनात्मक रूप से अधिक योगदान देता है। प्रस्तुत अध्ययन में भारत में उच्च शिक्षा और उस में महिलाओं की प्रस्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : आधुनिक शिक्षा, महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, परंपरा, धर्म, उच्च शिक्षा की भूमिका।

प्रस्तावना

प्राचीन समय में हिंदू महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे वैदिक काल से ही भारत में महिलाओं को पुरुषों की भांति संपत्ति का अधिकार प्राप्त था। न्याय हेतु न्यायालय में जा सकती थी, हमने कालिदास के मशहूर ड्रामा शकुंतलम में पढ़ा है कि किस तरह शकुंतला ने राजा दुष्यंत के दरबार में अपना पक्ष रक्षा और न्याय की मांग की। इसी तरह के उदाहरण हमें ऋग्वेद में भी मिलते हैं। संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि वैदिक एवं प्राचीन काल में महिलाओं को पुरुषों के समान बराबरी का अधिकार, सम्मान प्राप्त थे तथापि मध्य युग आते–आते महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं रही। स्वतंत्र भारत में महिला शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एक बार पुनः समाज में अहम मुद्दा बना और इन्हें तमाम सरकारी योजनाओं में अहम स्थान दिया गया।

प्रत्येक समाज में शिक्षा एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी परिवर्तन का निर्धारक होता है हरबर्ट स्पेंसर के सामाजिक उद्विकास के सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक समाज उद्विकासीय प्रक्रिया के अंतर्गत सरलता से जटिलता की ओर बढ़ता है जैसे जैसे समाज प्रगति की ओर बढ़ता है उसे नवीनएवं पूर्व से अधिक जटिल मांगो एवं दबावों के साथ सामंजस्य की आवश्यकता पड़ती है, ऐसे में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सभी आधुनिक समाजों की आवश्यकता बन कर उभरी है।

जनसंख्या मात्र सभ्यता का निर्माण नहीं करती, अपितु सभ्यता के निर्माण हेतु शिक्षित, विद्वान पुरुष एवं महिला की आवश्यकता होती है। शिक्षा हमें चुनौतियां का सामना करने में सक्षम बनाती है। किसी भी देश में समृद्धि शिक्षित, ज्ञानी, चरित्रवान, दृढ़ संकल्पवान है, गतिशील आधुनिक मानसिकता रखने वाले पुरुषों एवं महिलाओं पर निर्भर करती है शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य सभी को ज्ञान प्रतिभा एवं संसाधन प्राप्त करने के लिए तैयार करना है और उन्हें राष्ट्र निर्माण में उपलब्ध कराना है।

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण, महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण और शक्ति हासिल करने की बात करता है। इसमें जागरूकता बढ़ाना, आत्मविश्वास का निर्माण, विकल्पों का विस्तार, संसाधनों तक पहुंच बढ़ाना और नियंत्रण करना शामिल है सशक्तिकरण भीतर से आना चाहिए। सशक्तिकरण एक अवधारणा मात्र नहीं है वरन सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत मापदंडों की सहायता से परिभाषित एक प्रक्रिया है जिसमें निम्नलिखित घटक शामिल हैं।

1. समाज के संसाधनों का उपयोग करने के अवसरों तक समान पहुंच
2. विचार एवं व्यवहार में लिंग भेद भाव का निषेध
3. हिंसा से मुक्ति
4. आर्थिक आत्मनिर्भरता
5. निर्णय निर्माण करने वाली तमाम संस्थाओं में समान भागीदारी

6. अपनी जिंदगी से संबंधित फैसलों में स्वयं की इच्छा की स्वतंत्रता

सशक्तीकरण वास्तव में एक प्रक्रिया है जो शक्ति की संरचना एवं शक्ति के संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करती है और उसमें शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है शिक्षा ही इस संदर्भ में ज्ञान देती है, तमाम परिस्थितियों के संदर्भ में आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है जिससे समाज वर्तमान व्यवस्था पर सवाल उठाने योग्य बनता है, पितृसत्ता को चुनौती देता है। अतः महिला सशक्तिकरण में शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शिक्षा एवं आधुनिकीकरण का महिला छात्राओं के मूल्यों आदर्शों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं को आधुनिकीकरण ने किस प्रकार प्रभावित किया, का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन लखनऊ शहर में उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही छात्राओं पर किया गया एक शोध अध्ययन है जिसमें स्नातक की शिक्षा ग्रहण कर रही 50 छात्राओं को अध्ययन की इकाई के रूप में शामिल किया गया है।

यह अध्ययन वर्णानात्मक शोध अध्ययन है जिसके अंतर्गत निदर्शन का चयन कोटा निदर्शन के माध्यम से किया गया है अध्ययन का समग्र ''लखनऊ विश्वविद्यालय'' है। तथ्य संकलन हेतु ''प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों'' का प्रयोग किया गया है प्राथमिक स्रोत के रूप में साक्षात्कार अनुसूची एवं वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत पुस्तकों, जर्नल्स समाचार पत्र, संबंधित साहित्य आदि का प्रयोग किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

मधोक (2001) में अपने अध्ययन ''मीडिया और महिलाये'' में प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया दोनों को शिक्षा के संपूर्ण विषयों पर उदासीन माना है कई महिलाओं सहित वैकल्पिक फिल्मकारों ने क्रांतिकारी मित्रों तथा वीडियो फिल्मों की लाइन लगा दी लेकिन वितरण व्यवस्था की कमी के वजह से ऐसे कृतियों का प्रयोग गतिशीलता बढ़ाने और सशक्तीकरण के लिए नहीं किया जा सका।

देसई और ठक्कर (2001) ने अपने अध्ययन में पाया कि महिलाओं की उच्च शिक्षा सामाजिक और व्यावसायिक गतिशीलता को प्रेरित करती है अतः व्यक्ति पारिवारिक एवं सामाजिक गतिशीलता हेतु निःसंदेह उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में नजर आता है। नीरा देसाई और उषा ठक्कर ने अपने अध्ययन में यह दर्शाया की साक्षरता तथा प्रारंभिक शिक्षा सामाजिक व मानवीय विकास की जरूरतों को पूरा करती है तथा अधिक आय अर्जन एवं बेहतर स्वास्थ्य का साधन है तथा महिलाओं की उच्च शिक्षा महिलाओं का सामाजिक व्यवसायिक विकास करती है इस प्रकार व्यक्तिगत पारिवारिक तथा सामाजिक गतिशीलता के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है।

आहूजा (1992) ने अपने एक अनुभव आश्रित अध्ययन जो कि राजस्थान के जिले 8 गांव में 18 से 50 आयु समूह के 753 स्त्रियों पर किया गया था उसमें निष्कर्ष रूप पाया कि स्त्रियों की सामाजिक गतिशीलता एवं जागरूकता चार तत्वों पर निर्भर करती है।

प्रथम स्त्री की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि द्वितीय उसका सामाजिक वातावरण, तृतीय उसका अपना दृष्टिकोण तथा चतुर्थ उसको अधिकार देने के पीछे पुरुषों की अपरिपक्वता, निम्न बुद्धि लब्धि कुठित व्यक्तित्व जैसे व्यक्तिगत कारक। जहां तक आर्थिक कारकों का संबंध है धन उपार्जन करने वाली तुलनात्मक रूप में से कम अधिकार प्राप्त है। इसी प्रकार उच्च जाति की महिलाओं को मध्यम जाति तथा निम्न जाति की स्त्रियों से कम अधिकार प्राप्त है। आयु के संदर्भ में यह तथ्य सामने आया है कि युवा पुरुष की तुलना में वृद्ध पुरुष अपनी स्त्री को अधिक अधिकार देते है।

अनेजा (2015) में अपने शोध पत्र ''विमेन इन हायर एजुकेशन मैनेजमेंट इन इंडिया'' में महिलाओं को शिक्षित क्यों करना जरूरी है इसके सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का उल्लेख करते हुए परिवार तथा समाज में लैंगिक असमानता को घटाने हेतु महिला शिक्षा की भूमिका को अहम बताया है। नीना अनेजा के अनुसार शिक्षा एक महिला को न केवल सामाजिक रूप में बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी सशक्त बनाती है बल्कि निर्णय लेने की क्षमता एवं अपने लक्ष्य तय करने तथा उन्हें हासिल करने के प्रति केंद्रित करती है। इनका यह भी कहना है किसी भी राष्ट्र का सांस्कृतिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास अधिकांशतः महिलाओं की उच्च शिक्षा पर निर्भर करता है अतः महिलाओं की उच्च शिक्षा पर किए जाने वाला व्यय बेकार नहीं जाएगा बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था एवं विकास में सुधार करेगा।

व्यक्तिक अध्ययन

XY एक 24 वर्षीय एमकॉम चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा है जो नगरीय क्षेत्र में उच्च मध्यवर्गीय नाभिकीय हिंदू परिवार में रहती है इनके अनुसार आधुनिक शिक्षा ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया है और शहरी क्षेत्रों के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसे युवाओं की संख्या में वृद्धि हुई है जो शहर आकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं परंपरागत रोजगार को छोड़कर आधुनिक रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कर रहे हैं और आधुनिक मूल्यों के साथ जीवन यापन कर रहे है।

धर्म में विश्वास संबंधित प्रश्न पर XY ने बताया कि उसका विश्वास है कि कोई अलौकिक शक्ति अवश्य है परंतु किसी धर्म में उसका विश्वास नहीं है। XY ने बताया कि बचपन में वह धार्मिक कर्मकाडों में सहभागिता करती थी परंतु अब वो धार्मिक क्रियाओं में भाग नहीं लेती वह प्रातः काल उठकर ध्यान अवश्य करती है जिससे उसके तन एवं मन एवं मस्तिष्क को स्फूर्ति मिलती है।

XY ने बताया कि उसके अनुसार धर्म जोड़ने के बजाय तोड़ने का काम करता है जो जितना धार्मिक होता है वह उतना बुरा होता है धन का नाम लेकर धार्मिक नेता केवल अपना स्वार्थ साधते हैं और धर्म के लोग के विरूद्ध विचार फैलाते हैं आज धर्म के नाम पर मोब लिंचिंग हो रही है, मानव हत्या हो रही है, कहीं ब्लास्ट हो रहे हैं ऐसा करने के लिए किसी धर्म में शिक्षा नहीं दी गई है

लेकिन लोग धर्म के नाम पर ऐसा कर रहे हैं यह धर्म का भ्रष्ट रूप है इसलिए मैं किसी धर्म को नहीं मानती मैं केवल मानव धर्म पर विश्वास करती हूं और जीवन की समस्याओं का हल तार्किकता के द्वारा ढूढती हूँ न कि धर्म में।

शिक्षा के महत्व पर पूछे सवाल पर XY ने बताया कि शिक्षा से उनमें आधुनिक मूल्यों का विकास हुआ है और शिक्षा से उनमें या योग्यता विकसित हुई है कि वह किसी भी प्रकार की परिस्थितियों से अनुकूलन कर सकती हैं महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व पर चर्चा करते हुए XY ने बताया कि वर्तमान समय में लड़कियों के लिए आधुनिक शिक्षा बहुत जरूरी है चाहे भविष्य में वह नौकरी करें या न करें।

XY ने बताया कि उसके स्वयं के परिवार में विवाह के लिए ना केवल उसका बड़ा भाई बल्कि मां–बाप भी एक पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों वाली लड़की को अपने घर में बहू बनाना चाहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि एक पढ़ी–लिखी आधुनिक विचारों वाली लड़की सामाजिक दायित्वों को अच्छे से निभा पाएगी और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना तार्किकता से कर सकेगी इसलिए लड़कियों के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है यदि लड़की शिक्षित होती है तो उसको अच्छा वर सरलता से मिल जाता है साथ ही जीवन की नवीन परिस्थितियों के साथ अनुकूलन करने में शिक्षा उसकी सहायता करती है। इसके अतिरिक्त भविष्य में उसके साथ यदि कोई अनहोनी होती है जैसे–तलाक, विधवा या पति से अलगांव तो ऐसी परिस्थिति में उसको आत्मनिर्भर बनने में शिक्षा ही काम आती है।

XY का कहना है कि शिक्षा ने उसके भीतर भी आधुनिक विचारों एवं मूल्यों का संचार किया है इसका प्रभाव उनके पारिवारिक संबंधों पर भी पड़ा है उनके एवं माता पिता के मध्य संबंध अब ज्यादा उदार हैं विवाह के विषय में चर्चा करने पर XY ने बताया कि उनका एक अंतर्जातीय पुरुष मित्र है जिससे वह अपने माता–पिता से मिलवा कर उनकी सहमति से भविष्य में विवाह करेंगी परंतु विवाह से पूर्व उनकी इच्छा है कि दोनों नौकरी में आ जाए जिससे वैवाहिक जीवन की गाड़ी को चलाने में दोनों समान रूप से सहयोग करें अधिक आयु में विवाह को लेकर वह बिल्कुल चिंतित नहीं है और कहती है कि शहरी क्षेत्रों में पढ़ने वाली आधुनिक लड़कियां 30 वर्ष के बाद ही विवाह के बारे में सोच रही हैं इसलिए उन्हें इसकी कोई चिंता नहीं है और अभी फिलहाल उनकी प्राथमिकता उच्च शिक्षा पूर्ण करके नौकरी प्राप्त करना है और नौकरी के लिए वो अन्य राज्यों में भी व्यवस्थित हो सकती है ऐसा करने में उन्हें कोई समस्या नहीं है XY मोबाइल इंटरनेट जैसे तकनीकी का अधिकांश प्रयोग करती हैं और उन्होंने बताया कि मोबाइल इंटरनेट आज हर इंसान की आधारभूत जरूरत बन गई है यह तकनीकी हमको अपने परिवार से जोड़े रखती है लड़कियों की सुरक्षा के लिए भी यह महत्वपूर्ण है और इससे हमको ज्ञानात्मक सूचनाएं प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

XY को राजनीति में ज्यादा रुचि नहीं है और लड़कियों के लिए राजनीति को सुरक्षित नहीं मानती XYका मानना है कि राजनीति में दिन प्रतिदिन आदर्शों एवं मूल्यों का ह्रास हो रहा है इसलिए रोजगार के लिए लड़कियों को राजनीति के अतिरिक्त अन्य विकल्पों का चयन करना चाहिए।

व्यक्तिक अध्ययनः–2

AB चतुर्थ सेमेस्टर की 24 वर्षीय छात्रा है वह नगरीय क्षेत्र के निम्न वर्गीय नाभिकीय मुस्लिम परिवार में रहती है परिवार में माता–पिता के अतिरिक्त दो छोटे भाई और एक छोटी बहन है पिता की उम्र 50 वर्ष इंटरमीडिएट तक शिक्षा ग्रहण की है और निजी व्यवसाय करते हैं, माता (उम्र 46) वर्ष ग्रहणी हैं।

छोटे भाइयों की उम्र क्रमशः 17 एवं 15 वर्ष है जिनमें से बड़ा कक्षा 11 तथा छोटा भाई कक्षा 9 का छात्र है और छोटी बहन उम्र 13 वर्ष कक्षा सात की छात्रा है। सभी भाई बहन अभी अविवाहित हैं AB ने अपने बारे में बताया कि उनकी माता अशिक्षित थी और वह मुझे भी पढ़ाना नहीं चाहती थी मुझे शिक्षा लेने में बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ा है मेरी प्रारंभिक शिक्षा मकतब में हुई थी तत्पश्चात शहर के महिला कालेज में कक्षा 6 से कक्षा 12 तक शिक्षा ग्रहण की कक्षा 12 तक पिता ने मेरी पढ़ाई का साथ दिया परंतु इंटरमीडिएट उत्तीर्ण करने के पश्चात मेरी माता मेरा विवाह मौसी के बेटे से कर देना चाहती थी परंतु मेरी इच्छा उच्च शिक्षा ग्रहण करने की थी इसके लिए जब मैंने घर से इजाजत मांगी तो घर वालों ने साफ इंकार कर दिया मेरी जिद् और मेरे बहुत समझाने पर माता पिता ने मुझे इस शर्त पर बी0ए0 करने की अनुमति दी कि मैं नकाब में पढ़ने जाऊंगी क्योंकि विश्वविद्यालय में सह शिक्षा होती है और वे नहीं चाहते हैं कि मैं बिना हिजाब के लड़कों के साथ पढ़ाई करूं।

इस प्रकार मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय में बी0ए0 प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया प्रारंभिक दिनों में मेरे पिताजी मुझे विश्वविद्यालय तक छोड़ने साथ आते थे परंतु काम का नुकसान होने की वजह से धीरे–धीरे उनका आना कम हो गया। प्रथम वर्ष के कुछ माह बाद हिजाब में अध्ययन करती रही परंतु मुझे कक्षा में अटपटा सा प्रतीत होता था कुछ माह के पश्चात मैं घर से हिजाब में जाती और विश्वविद्यालय पहुंचकर उसको हटा देती जब कक्षा से बाहर निकलती तो घर वापसी में फिर हिजाब लगा लेती थी परंतु एक दिन घर वालों को पता चल गया मैं विश्वविद्यालय में हिसाब हटा देती हूं तो उन्होंने मुझे ना सिर्फ डाटा बल्कि कई दिन विश्वविद्यालय भी जाने नहीं दिया तब मैंने उनको समझाया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता मैंने कई उदाहरण भी दिए और आग्रह किया कि बिना हीजाब मुझे विश्वविद्यालय जाने दे और उच्च शिक्षा ग्रहण करने की इजाजत दे आखिरकार वह मेरी बातों एवं तर्कों से राजी हो गए और मुझे आज्ञा मिल गई और मैंने अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण की घर वालों को एवं तमाम रिश्तेदारों को सबको मेरे ऊपर गर्व था।

स्नातक के बाद मैंने स्नाकोत्तर में प्रवेश लिया और अब मेरा लक्ष्य यूजीसी नेट परीक्षा उत्तीर्ण करके प्रोफेसर बनना है जिससे मैं अपनी तरह कई लड़कियों के जीवन में शिक्षा का उजाला फैला सकूं और आधुनिकता

के इस दौर में मैं उनको दुनिया के साथ कदम से कदम मिला कर चलना सिखा सकूं।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है लड़कियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है और वह माता पिता के रूढ़िवादी एवं परंपरा वादी विचारों का विरोध कर रही है वह पारंपरिक बंधनों को तोड़कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के प्रति अधिक सचेत हैं हालांकि मुस्लिम परिवारों में आज भी पर्दा का प्रथा का पालन हो रहा है परंतु कुछ पर शहरी परिवारों विशेषकर जिनमें माता–पिता शिक्षित हैं उन परिवारों में पर्दा प्रथा में भी शिथिलता आई है और ऐसे परिवारों की लड़कियां आधुनिक वेशभूषा जींस पैंट शर्ट इत्यादि पहनकर बाहर निकल नहीं है लड़कों की भांति स्कूटी चला रही हैं अकेले बाजार आ जा रही हैं और आधुनिक मूल्यों को अपना रही हैं परंतु धार्मिक प्रभाव से अभी भी पूर्णतः स्वतंत्र नहीं हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मधोक, सुजाता, 2001 ''मीडिया और महिलाएँ '' योजना, अक्टूबर 2001

देसाई, नीरा एवं ठक्कर, ऊषा (2001) भारतीय समाज में महिलाएं नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट

जैन, सुशीला (1998), स्टेटस ऑफ वीमेन, जयपुर प्रिंटवेल पब्लिशर्स

रूहेला, सत्यापल (1998), एम्पावरमेन्ट आफ इण्डियन मुस्लिम वीमेन, एम0डी0 पब्लिकेशन्स

सिंह, योगेन्द्र (1986), मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंण्डियन ट्रेडिशनः रावत पब्लिकेशन्स जयपुर पृ0 201–05

गिडेंस, एन्थनी. (1990). दी कनसिक्वेन्सेस ऑफ मॉडर्निटीः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

दुबे, एस.सी. (1986). मार्डनाइजेशन एण्ड इट्स एडोपटिव डिमांड्स ऑफ इण्डियन सोसायटी, एम.एस. गोरे (सम्पा0) सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, न्यू दिल्ली

चिटनिस, सूमा (1981) ए लाँग वे टू गोः रिपार्ट ऑन ए सर्वे ऑफ शेडयूल्ड कास्ट हाई स्कूल एवं कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन फिफ्टीन स्टेट्स ऑफ इण्डिया, न्यू दिल्ली, अलायड पब्लिशर्स

श्रीनिवास, एस.एम.एन. (1956), सोशल चेन्ज इन मार्डन इण्डिया, एलायड पब्लिशर्स, बाम्बे, पृ0 50

श्रीनिवास, एम.एन. (1971). मार्डनाइजेशनः अ फ्यू क्वेरीज, पृ0 153